INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

उदंत मार्तण्ड से एआई तक हिन्दी पत्रकारिता का क्रमिक विकास का विश्लेषण

* **डॉ. चन्द्रशेखर**
स्वतंत्र शोधकर्ता,
नई दिल्ली
Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17638470
PP:117-132

ARTICLE INFO
Received:17-09-2025
Revised:23-09-2025
Accepted: 20-11-2025
Published:01-12-2025

शोध सारांश

यह शोध पत्र हिंदी पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास की यात्रा का विशलेषण करता है, जो 1826 में 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन से लेकर आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के युग तक फैला हुआ है। यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है। शोध का स्वरूप वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों है।यह अध्ययन विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप, इसके संघर्षों और महत्वपूर्ण सफलताओं का मूल्यांकन करता है। विशेष रूप से, यह स्वतंत्रता संग्राम में इसकी अमूल्य भूमिका और स्वतंत्रता के बाद के इसके व्यापक विस्तार पर प्रकाश डालता है। वर्तमान में, यह शोध पत्र इस बात पर गहराई से विचार करता है कि एआई किस प्रकार हिंदी पत्रकारिता की विषयवस्तु निर्माण, वितरण और लोगों तक इसकी पहुँच को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है। अंततः, यह हिंदी पत्रकारिता के भविष्य के लिए एआई द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले आशाजनक अवसरों और संभावित चुनौतियों पर दूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द – हिंदी पत्रकारिता, उदंत मार्तण्ड, स्वतंत्रता संग्राम,डिजिटल मीडिया,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई),भाषा,समाचार पत्र

प्रस्तावना

किसी भी प्रगतिशील समाज में पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है जो अपने नागरिकों को सटीक सूचना प्रदान करने, उन्हें शिक्षित करने और महत्वपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में एक अपरिहार्य भूमिका निभाती है। यह न केवल घटनाओं की रिपोर्टिंग

करती है, बल्कि सार्वजनिक विमर्श को आकार देती है और सत्ता में बैठे लोगों की जवाबदेही सुनिश्चित करती है। भारत के संदर्भ में, हिंदी पत्रकारिता का एक समृद्ध और ऐतिहासिक महत्व है, जो लगभग दो शताब्दियों से समाज के ताने-बाने को बुनने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इस गौरवशाली यात्रा का आरंभ हिन्दी पत्राकारिता के मनु, पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा 30 मई, 1826 को कलकत्ता के कोलू टोला (आमडातल्ला गली) से प्रकाशित 'उदंत मार्तण्ड' नामक पहले हिंदी समाचार पत्र के साथ हुआ। यह प्रकाशन भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक युगांतकारी घटना थी, जिसने न केवल भाषाई पत्रकारिता की नींव रखी, बल्कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना के प्रसार का मार्ग भी प्रशस्त किया (तिवारी,1997)। 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन उस दौर में एक साहसिक कदम था, जिसने औपनिवेशिक शासन के तहत दबी हुई आवाजों को एक मंच प्रदान किया और राष्ट्रीय पहचान की भावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।कालक्रम के साथ, हिंदी पत्रकारिता ने अनेक महत्वपूर्ण पड़ावों को पार किया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, इसने एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य किया, जिसने जनता को एकजुट किया और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष को गति दी। स्वतंत्रता के पश्चात, हिंदी पत्रकारिता का विस्तार व्यापक हुआ, इसने देश के दूर-दराज के क्षेत्रों तक अपनी पहुँच बनाई और समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ को बुलंद किया। तकनीकी प्रगति के युग में, हिंदी पत्रकारिता ने भी नए माध्यमों को अपनाया और अपनी कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव किए। रेडियो, टेलीविजन और अंततः इंटरनेट के आगमन ने हिंदी समाचारों के प्रसार और उपभोग के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया।आज, 21वीं सदी में, हम एक नए तकनीकी बदलाव के मुहाने पर खड़े हैं, जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) पत्रकारिता के क्षेत्र में एक तेजी से महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर रहा है। एआई में समाचारों के उत्पादन, वितरण और विश्लेषण के तरीकों में क्रांति लाने की अपार क्षमता है। यह न केवल समाचारों को अधिक कुशलता से संसाधित और वितरित करने में मदद कर सकता है, बल्कि व्यक्तिगत पाठकों के लिए सामग्री को अनुकूलित करने और नए प्रकार की खोजी पत्रकारिता को सक्षम करने की भी क्षमता रखता है।यह शोध पत्र 'उदंत मार्तण्ड' के प्रारंभिक और चुनौतीपूर्ण दिनों से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के वर्तमान में बढ़ते प्रभुत्व तक हिंदी पत्रकारिता के विकास की एक व्यापक और विस्तृत यात्रा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह विभिन्न ऐतिहासिक युगों में हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप, चुनौतियों, उपलब्धियों और सामाजिक प्रभाव की पड़ताल करता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध पत्र इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करता है कि एआई किस प्रकार हिंदी पत्रकारिता के भविष्य को आकार दे रहा है, साथ ही इस क्षेत्र के लिए संभावित अवसरों और चुनौतियों पर भी विचार करता है।

शोध प्रश्न

- हिन्दी पत्रकारिता की नींव में 'उदंत मार्तण्ड' की भूमिका क्या रही?
- समय के साथ हिन्दी पत्रकारिता में क्या प्रमुख बदलाव आए?
- डिजिटल युग में हिन्दी पत्रकारिता की दिशा और स्वरूप कैसे बदले हैं?
- AI हिन्दी पत्रकारिता को किस स्तर तक प्रभावित कर रहा है?

शोध उद्देश्य

- हिन्दी पत्रकारिता के विकास की ऐतिहासिक समीक्षा करना।
- तकनीकी प्रगति के साथ आये बदलावों को चिन्हित करना।
- AI के कारण उत्पन्न नैतिक, भाषाई और व्यावसायिक प्रश्नों को समझना।
- हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य में AI की संभावनाओं का आकलन करना।

शोध प्रविधि

यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है, जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों, सामाजिक संदर्भों और तकनीकी हस्तक्षेपों को एक वैचारिक अनुशीलन के माध्यम से देखा गया है। शोध का स्वरूप वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों है। अध्ययन में हिन्दी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसके विकासक्रम, सामाजिक योगदान, तकनीकी रूपांतरण तथा वर्तमान में AI के माध्यम से उत्पन्न चुनौतियों और संभावनाओं का समावेश किया गया है। इस शोध में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है, जिनमें हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ, विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित शोध-प्रबंध और समाचार पोर्टल्स पर उपलब्ध विश्लेषणात्मक लेख सम्मिलित हैं।

उदंत मार्तण्ड: हिंदी पत्रकारिता की आधारशिला (1826-1857)

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का आरंभ 'उदंत मार्तण्ड' से हुआ, जिसने 19वीं शताब्दी के भारत में न केवल हिंदीभाषी समाज को अभिव्यक्ति का एक माध्यम प्रदान किया, बल्कि एक नए बौद्धिक जागरण का द्वार भी खोला। 30 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित यह पत्र, पंडित जुगल किशोर शुक्ल के अथक प्रयासों का परिणाम था, जो हिंदीभाषी जनता के लिए समाचार और विचारों की दुनिया को सुलभ बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़े (पांडे, 2024)। उस समय भारत पर ब्रिटिश शासन था और पत्रकारिता मुख्यतः अंग्रेजी तथा बांग्ला जैसी भाषाओं तक सीमित थी। 19वीं सदी का आरंभ भारतीय समाज के लिए एक संक्रमणकाल था। अंग्रेजी शासन ने भारत में आधुनिक शिक्षा, मुद्रण तकनीक और नई राजनीतिक चेतना का संचार किया। इसी समय हिंदीभाषी जनमानस को एक

ऐसी माध्यम की आवश्यकता थी, जो उनकी भाषा में समाचार, विचार और जानकारी उपलब्ध कराए।'उदंत मार्तण्ड' ने इस रिक्तता को भरा। सप्ताह में एक बार प्रकाशित होने वाला यह समाचार पत्र भाषा की सरलता, विषयों की प्रासंगिकता और जनसाधारण के निकटता के कारण विशिष्ट था। इसमें प्रयुक्त भाषा एक प्रकार की सहज खड़ी बोली थी, जिसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ उर्दू और लोकभाषा के शब्दों का भी समावेश दिखाई देता है (सिंह,अराफात,2022)। इसका उद्देश्य था, हिंदीभाषी जनता को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सूचनाओं से अवगत कराना, जो उस समय के साम्राज्यवादी और शोषणकारी तंत्र में एक मौन प्रतिरोध का आरंभिक रूप था।हालांकि 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन कोलकाता से हुआ, लेकिन इसकी आत्मा उत्तर भारत के हिंदीभाषी क्षेत्रों में बसती थी। यही कारण था कि इसकी विषयवस्तु और अभिव्यक्ति शैली में अवध, बुंदेलखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे क्षेत्रों की भाषिक संवेदना स्पष्ट दिखाई देती है (तिवारी,1997)।'उदंत मार्तण्ड' का सबसे बड़ा योगदान हिंदीभाषी समाज में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का अंकुरण था। उदंत मार्तण्ड की पहले अंक के संपादकीय में ही अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था की 'हिन्दुस्तानियों के हित के हेत'। इस उदघोषणा के साथ पत्र का प्रकाशन हुआ है। इसने जनता को यह एहसास दिलाया कि उनकी समस्याओं, आकांक्षाओं और विचारों का भी एक मंच हो सकता है, जो उनकी अपनी भाषा में हो। इसने सामाजिक असमानताओं, शिक्षा के अभाव, महिलाओं की दुर्दशा, किसानों की समस्याओं जैसे विषयों पर प्रकाश डालते हुए धीरे-धीरे जनचेतना को विकसित किया (बिहारी,2021)। विशेष रूप से, एक ऐसे समय में जब भारत में राष्ट्रीय आंदोलन ने स्पष्ट रूप नहीं लिया था, 'उदंत मार्तण्ड' ने सांस्कृतिक और भाषाई आत्मगौरव के माध्यम से एक प्रकार के शुरुआती राष्ट्रीय बोध का संचार किया ।भाषाई दृष्टि से भी 'उदंत मार्तण्ड' ने हिंदी के पत्रकारिता रूप का प्रथम प्रयोग किया। ।शुक्ल जी ने अपने उदंत मार्तण्ड के अंतिम अंक में लिखा-

"आज दिवस लौं उग चुक्यौ यह मार्तण्ड उदन्त। अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।"

इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ थीं एक तो हिंदीपाठक वर्ग उस समय शिक्षित नहीं था, दूसरे, कलकत्ता से उत्तर भारत तक समाचार पत्र पहुंचाने की डाक-व्यवस्था नितांत अविकसित थी। आर्थिक कठिनाइयाँ तो थीं ही, किंतु सबसे बड़ी चुनौती थी, सरकार और समाज से अपेक्षित समर्थन का अभाव। सरकारी विज्ञापन और डाक शुल्क में छूट जैसे साधनों की अनुपलब्धता ने इसे आर्थिक रूप से टिकने नहीं दिया (शम्भूनाथ,2022)।पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने अनेक प्रयासों के बावजूद जब समर्थन प्राप्त नहीं किया, तो मात्र डेढ़ वर्ष के भीतर 'उदंत मार्तण्ड' को बंद करना पड़ा। दिसंबर 1827 में इसका अंतिम अंक प्रकाशित हुआ। परंतु इसकी अल्पायु ने इसके ऐतिहासिक महत्व को कम नहीं किया। इस पत्र ने हिंदी भाषा में समाचार प्रकाशन की परंपरा की शुरुआत की, जो आगे चलकर

हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र 'समाचार सुधावर्षण' (1854) और 'कवि वचन सुधा' (1867), 'बनारस अखबार' (1845) जैसे अन्य हिंदी पत्रों द्वारा समृद्ध हुई। इस पत्र की सहज और जीवंत भाषा शैली ने आगे चलकर हिंदी पत्रकारिता की भाषिक धारा को दिशा दी।

बाद के हिंदी समाचार पत्रों ने इसी भाषा-शैली का अनुकरण किया, जिसने हिंदी को न केवल समाचारों की भाषा, बल्कि जनसंचार की सशक्त भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया (चतुर्वेदी, 2009)।इस प्रकार, 'उदंत मार्तण्ड' केवल एक समाचार पत्र नहीं था; वह हिंदीभाषी समाज के बौद्धिक जागरण का उद्घोष था। पंडित जुगल किशोर शुक्ल के द्वारा बोया गया यह बीज बाद में हिंदी पत्रकारिता के विशाल वटवृक्ष का आधार बना। आज जब हिंदी पत्रकारिता वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है, तब 'उदंत मार्तण्ड' के उस प्रथम दीपक को स्मरण करना न केवल एक ऐतिहासिक कर्तव्य है, बल्कि हिंदी के प्रति आस्था और पत्रकारिता के मूलभूत दायित्वों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। 'उदंत मार्तण्ड' ने जो ध्वनि 1826 में उठाई थी, वह आज भी हिंदी पत्रकारिता की धड़कन में सुनाई देती है। एक जीवंत, जागरूक और सत्य के प्रति निष्ठावान धड़कन।

स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी पत्रकारिता (1857-1947)

1857 के बाद भारतीय समाज में अंग्रेजी शासन के दमन के प्रति असंतोष बढ़ने लगा। इस असंतोष की अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी पत्रकारिता बनी। प्रारंभ में समाचार पत्रों ने सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित किया, किंतु धीरे-धीरे स्वतंत्रता आंदोलन की राजनीतिक चेतना पत्रकारिता के केंद्र में आ गई। 1870 के दशक से हिंदी में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने सीधे-सीधे औपनिवेशिक शासन की आलोचना प्रारंभ की।सोम प्रकाश अल्मोड़ा अखबार, 'भारत मित्र',हरिशचन्द्र मैगज़ीन, नवजीवन जैसे पत्रों ने समाज सुधार के साथ-साथ स्वतंत्रता आंदोलन का भी प्रचार प्रारंभ किया। 'भारत मित्र' के संपादक बालकृष्ण भट्ट ने स्पष्ट शब्दों में अंग्रेजी शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों की आलोचना की (वोहरा,2004)।

इसी काल में हिंदी पत्रकारिता ने भारतीय जनता के बीच विदेशी शासन के प्रति आक्रोश और स्वराज्य की आकांक्षा को संगठित करने का कार्य किया।बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब बंग-भंग आंदोलन (1905) ने देशभर में राष्ट्रवादी भावनाओं को तेज किया, हिंदी पत्रकारिता ने इसे जनता के बीच लहर की तरह फैलाया। 'किसान', 'महामना मालवीय जी का अभ्युदय', 'सरस्वती' जैसी पत्रिकाओं ने सामाजिक पुनर्जागरण के साथ-साथ राजनीतिक चेतना को भी व्यापक बनाया। तिलक का केसरी,महावीर प्रसाद द्विवेदी संपादित 'सरस्वती' पत्रिका ने जहाँ एक ओर हिंदी साहित्य के

नवजागरण को जन्म दिया, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में भी सक्रिय योगदान दिया (मिश्रा, 2004)।

1915 में गांधीजी के भारत आगमन के बाद स्वतंत्रता आंदोलन ने एक नया मोड़ लिया। सत्याग्रह, असहयोग, नमक सत्याग्रह जैसे आंदोलनों ने पूरे देश में राजनीतिक चेतना का विस्फोट कर दिया। हिंदी पत्रकारिता ने गांधीवादी आंदोलनों का न केवल समर्थन किया, बल्कि उनके आदर्शों और उद्देश्यों को ग्राम्य भारत तक पहुँचाया। महात्मा गांधी के आगमन ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी, और हरिजनसेवक जैसे पत्रों ने गांधीवादी दर्शन और आंदोलनों को जन-जन तक पहुँचाया (तिवारी, 2019)।

'प्रताप' के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने किसानों, मजदूरों और निम्नवर्गीय समाज के उत्पीड़न को उजागर करते हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ें हिलाने का कार्य किया (तिवारी, 1997)। 'प्रताप' के माध्यम से विद्यार्थी जी ने पत्रकारिता को सामाजिक क्रांति का औजार बनाया और स्वयं भी शहीद हो गए।इसी प्रकार 'अभ्युदय', 'जागरण', 'सत्याग्रह', 'मतवाला' जैसे हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने औपनिवेशिक सत्ता के दमन का विरोध किया और राष्ट्रीय आंदोलनों को आवाज दी। 'मतवाला' पत्रिका अपने क्रांतिकारी तेवर और तीखे व्यंग्य के लिए जानी जाती थी। हिंदी पत्रकारिता ने आंदोलन को सिर्फ नगरों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे गाँवों-कस्बों तक प्रसारित किया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन एक जनांदोलन में परिवर्तित हो सका। 1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकांड ने जब संपूर्ण देश को झकझोर दिया, हिंदी पत्रों ने उसे अत्यधिक संवेदनशीलता और क्रोध के साथ प्रस्तुत किया। अनेक पत्रों ने अपने विशेष अंकों के माध्यम से इस नरसंहार की नृशंसता को उजागर किया । अंग्रेजी शासन ने भी हिंदी पत्रकारिता की बढ़ती शक्ति को भाँपते हुए 'प्रेस एक्ट' जैसे दमनकारी कानूनों द्वारा उसे नियंत्रित करने का प्रयास किया। 1910 का 'भारतीय प्रेस अधिनियम' और भारतीय प्रेस अधिनियम (आपातकालीन शक्तियाँ), 1931 इसके उदाहरण हैं, जिनके तहत पत्रों पर जुमार्ना, प्रतिबंध और संपादकों की गिरफ्तारी जैसी कार्रवाइयाँ हुईं (जैन, 2003)।

हिंदी के प्रमुख पत्रकारों ने इन दमनात्मक नीतियों का निर्भयता से मुकाबला किया। गणेश शंकर विद्यार्थी,, माखनलाल चतुर्वेदी (कर्मवीर के संपादक) जैसे पत्रकारों ने पत्रकारिता को स्वतंत्रता संग्राम का सशक्त माध्यम बनाया। बाबूराव पराड़कर ने 'आज' अखबार के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। 'आज' का प्रभाव इतना व्यापक था कि इसे 'हिंदी पट्टी का बाइबिल' कहा जाने लगा।पराड़कर ने स्पष्ट शब्दों में अंग्रेजी शासन की नीतियों की आलोचना की और स्वराज्य की माँग को लोकप्रिय बनाया।माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को साहित्यिक गरिमा और क्रांतिकारी चेतना से सम्पन्न किया। उनका लेखन न केवल राष्ट्रीय चेतना को

जाग्रत करता था, बल्कि उसमें एक काव्यात्मक भावनात्मकता भी होती थी जो जनमानस को आंदोलित करती थी । 'कर्मवीर' ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं को जनजन तक पहुँचाया (भारद्वाज,2022)।1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान हिंदी पत्रकारिता पर भयंकर दमन चक्र चला। 'आज', 'प्रताप', 'कर्मवीर' समेत अनेक पत्रों के संपादक जेल भेजे गए, पत्र कार्यालयों पर ताले लगाए गए, छापाखाने सील किए गए। फिर भी, भूमिगत पत्रिकाएँ, पर्चे और हस्तलिखित समाचार पत्रकों के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता का विस्तार (1947–1990)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता ने जनचेतना जगाने का जो कार्य किया था, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वह नए आयामों की ओर बढ़ा। 15 अगस्त 1947 के बाद हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुआ–आंदोलनधर्मी पत्रकारिता से विकासोन्मुख पत्रकारिता की ओर। स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता को लोकतांत्रिक व्यवस्था के निर्माण, सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगीकरण और ग्रामीण उत्थान जैसे विषयों पर राष्ट्रनिर्माण की भूमिका निभानी थी।

प्रारंभिक दशकों का परिदृश्य (1947–1960)

स्वतंत्रता के तुरंत बाद हिंदी अखबारों के सामने अनेक चुनौतियाँ थीं–संसाधनों का अभाव, प्रशिक्षण प्राप्त पत्रकारों की कमी, मुद्रण तकनीक में पिछड़ापन और अंग्रेजी मीडिया के प्रभुत्व से मुकाबला। बावजूद इसके, हिंदी पत्रकारिता ने तीव्रता से अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी। 'आज', 'प्रताप', 'राष्ट्रीय सहारा' और 'संपूर्णानंद' जैसे समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के सवालों को अपने विमर्श का हिस्सा बनाया ।1947 के बाद 'आज' अखबार ने राष्ट्र की एकता और अखंडता के मुद्दों को जोरदार ढंग से उठाया। वह लोकतंत्र को मजबूत करने, साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जनमत तैयार करने और समाजवादी मूल्यों के समर्थन में मुखर रहा । बाबूराव विष्णु पराड़कर के निधन के बाद भी 'आज' की विचारधारा जनहितकारी रही। इसी काल में छोटे कस्बों और ग्रामीण अंचलों से निकलने वाले साप्ताहिक पत्रों की संख्या बढ़ने लगी, जिसने हिंदी पत्रकारिता का आधार व्यापक बनाया।1960 के दशक में हिंदी पत्रकारिता का विस्तार तेज हुआ। देश के राजनीतिक परिदृश्य में कांग्रेस का प्रभुत्व, हरित क्रांति, औद्योगीकरण, बेरोजगारी और क्षेत्रीय असंतोष जैसे मुद्दों ने पत्रकारिता को नए विषय दिए। इसी समय हिंदी में बड़े प्रकाशन समूहों की शुरुआत हुई। 'नवभारत टाइम्स' का प्रकाशन टाइम्स ग्रुप ने दिल्ली और मुंबई से प्रारंभ किया, जिसने हिंदी पत्रकारिता को शहरी मध्यवर्ग में नई पहचान दिलाई।'नवभारत टाइम्स' ने हिंदी पत्रकारिता में एक नया पेशेवर तेवर, परिष्कृत भाषा और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय खबरों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करने की परंपरा शुरू की (राय, 2014)।

इसी दौर में 'राजस्थान पत्रिका' और 'नवभारत',हिन्दुस्तान दैनिक जैसे क्षेत्रीय अखबारों ने मध्य भारत और राजस्थान क्षेत्र में हिंदी पत्रकारिता को मजबूत आधार दिया।तकनीकी स्तर पर भी इस काल में उन्नति हुई। लेटरप्रेस से ऑफसेट प्रिंटिंग की ओर संक्रमण शुरू हुआ, जिससे छपाई की गुणवत्ता और गति में सुधार हुआ। समाचार एजेंसियों, विशेषकर 'हिंदी समाचार एजेंसी' और 'समाचार भारती', ने हिंदी पत्रकारों को ताज़ा खबरों की उपलब्धता सुनिश्चित की (चतुर्वेदी,2009)।

आपातकाल और पत्रकारिता (1975–1977)

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में 1975 का आपातकाल एक निर्णायक मोड़ था। इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लगाया गया प्रेस सेंसरशिप हिंदी पत्रकारिता पर भी भारी पड़ा। कई अखबारों ने सेंसरशिप के भय से आत्मनियंत्रण अपना लिया, तो कुछ पत्रों ने प्रतिरोध का रास्ता चुना। आपातकाल के दौरान 3801 समाचार-पत्रों के डिक्लेरेशन जब्त कर लिए गए। 327 पत्रकारों को मीसा में बंद कर लिया गया। 290 अखबारों के विज्ञापन बंद कर दिये गये(कुमार,2022)। 'आज' जैसे अखबारों ने जहाँ संयमित प्रतिरोध किया, वहीं लोकराज, सेमिनार और अधिनियम जैसे कुछ छोटे पत्रों ने भूमिगत तरीके से स्वतंत्र पत्रकारिता जारी रखी। सरिका समाचार पत्र ने जुलाई 1975 के अंक में 27-28 संख्या के पृष्ठ संपादकीय सेंसर अधिकारी द्वारा काला किये गये वाक्यों सहित हूबहू प्रकाशित कर दिया। सरकार ने 3801 समाचार पत्रो के डिक्लेरेशन कैंसिल कर दिये और 290 अखबारों के विज्ञापन बंद कर दिये (सिंह,2017)।

गुजरात की साधना साप्ताहिक पत्रिका ने आपातकाल के विरुद्ध आवाज उठाई। भूमिगत पत्रिकाओं के लिए समाचार जुटाने में गुजरात मे जनसत्ता के संपादक वासुदेव भाई मेहता की बड़ी भूमिका रही(रश्मी,2022)। इस दौर में हिंदी पत्रकारिता ने यह अनुभव किया कि सत्ता के साथ आलोचनात्मक दूरी बनाए रखना आवश्यक है। पत्रकारिता के नैतिक साहस का भी इसी काल में परीक्षण हुआ।आपातकाल के बाद हिंदी पत्रकारिता ने और अधिक सचेत, संघर्षशील और जनमुखी तेवर अपनाया। सेंसरशिप के विरुद्ध जनता के समर्थन ने यह स्पष्ट कर दिया कि पत्रकारिता केवल समाचार देने का कार्य नहीं, बल्कि लोकतंत्र का प्रहरी भी है।

पुनःजागरण और प्रसार का दशक (1980–1990)

1980 का दशक हिंदी पत्रकारिता के पुनरुत्थान और विस्तार का समय रहा। 'जनसत्ता' का प्रकाशन रामनाथ गोयनका के नेतृत्व में हुआ, जिसके संपादक प्रभाष जोशी बने। 'जनसत्ता' ने हिंदी पत्रकारिता की भाषा, तेवर और दृष्टि को नया आयाम दिया। प्रभाष जोशी ने हिंदी को सहज, संवादधर्मी और जनमानस के निकट बनाने की कोशिश की (फ़ज़ल,2022)।जनसत्ता' ने हिंदी पत्रकारिता को 'गंभीर और विचारशील पत्रकारिता' का उदाहरण बनाया। इसी दौर में 'नई दुनिया' (इंदौर से प्रकाशित)

और 'हिंदुस्तान' (दिल्ली संस्करण) ने भी अपने प्रभाव को विस्तार दिया।इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव भी हिंदी पत्रकारिता पर पड़ने लगा था। 15 सितंबर 1959 को एक छोटे से प्रायोगिक प्रसारण के साथ दूरदर्शन की शुरुआत हुई थी।1982 में एशियाई खेलों के आयोजन के साथ दूरदर्शन का रंगीन प्रसारण शुरू हुआ, जिसने हिंदी में समाचार प्रस्तुति की नई संस्कृति को जन्म दिया। रेडियो पत्रकारिता के माध्यम से भी हिंदी भाषा ने देश के कोने-कोने तक अपनी पहुँच बनाई।तकनीकी दृष्टि से 1980 के दशक में कंप्यूटर आधारित मुद्रण तकनीक (डेस्कटॉप पब्लिशिंग) के प्रयोग की शुरुआत हुई। इससे हिंदी अखबारों की साज-सज्जा, लेआउट और उत्पादन क्षमता में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।स्वतंत्रता के बाद हिंदी पत्रकारिता का एक प्रमुख बदलाव विषय-विविधता का रहा। अब केवल राजनीति ही नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान, पर्यावरण, महिला मुद्दे, खेल और संस्कृति भी पत्रकारिता के मुख्य विषय बन गए (कुमार,2024)।ग्रामीण पत्रकारिता ने भी आकार लेना शुरू कर दिया। 'गाँव कनेक्शन' जैसे प्रयास भले ही बाद में सामने आए, लेकिन इसकी नींव इसी काल में 'कृषक भारती' और 'कृषक साप्ताहिक' जैसे पत्रों के जरिए पड़ी। हिंदी पत्रकारिता अब केवल शहरों की पत्रकारिता नहीं रही, बल्कि वह ग्रामीण भारत की धड़कनों को भी दर्ज करने लगी थी।

तकनीकी क्रांति और हिंदी पत्रकारिता (1990–2020)

1990 के दशक में भारत में आर्थिक उदारीकरण के साथ मीडिया जगत में निजी निवेश का प्रवाह बढ़ा। हिंदी पत्रकारिता, जो अब तक सीमित संसाधनों और परंपरागत तरीकों से संचालित थी, ने इस नए युग में तकनीकी नवाचारों को अपनाकर अपने प्रसार और प्रभाव दोनों में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की। मल्टी-एडिशन अखबारों की अवधारणा, उन्नत प्रिंटिंग तकनीक और संगठित वितरण नेटवर्क ने हिंदी समाचार पत्रों को छोटे शहरों और गाँवों तक पहुँचाया।सेटेलाइट टेलीविजन के आगमन ने दृश्य माध्यम में हिंदी पत्रकारिता का प्रवेश संभव किया। 'आज तक', 'जी न्यूज़', 'इंडिया टीवी', और 'एनडीटीवी इंडिया' और 'स्टार न्यूज़' जैसे चैनलों ने हिंदी भाषी दर्शकों के लिए समाचार को त्वरित और दृश्यरूप में प्रस्तुत किया। इसके साथ ही पत्रकारिता का स्वरूप अधिक तात्कालिक, गतिशील और प्रतिस्पर्धी हो गया (कुमार, 2024)।इंटरनेट के विस्तार ने हिंदी पत्रकारिता के स्वरूप में मौलिक परिवर्तन किए। आरंभिक वर्षों में हिंदी समाचार पत्रों ने अपने डिजिटल संस्करण शुरू किए, जो धीरे-धीरे स्वतंत्र डिजिटल पोर्टल और न्यूज़ ऐप्स में विकसित हो गए। 'नवभारत टाइम्स', 'दैनिक भास्कर', 'हिंदुस्तान', 'अमर उजाला' जैसे प्रमुख पत्रों ने अपनी ऑनलाइन उपस्थिति को सशक्त किया।इँदौर से प्रकाशित नई दुनिया ने पहला वेबपोर्टल 'वेब दुनिया' के नाम से शुरु किया।1998 तक लगभग 48 समाचार पत्र ऑन लाइन हो चुके थे (अग्रवाल,2021) ।डिजिटल मंचों ने समाचार प्रस्तुति में मल्टीमीडिया का प्रयोग, त्वरित अपडेट और पाठकों के साथ सीधा संवाद संभव

किया।सोशल मीडिया के उदय ने पत्रकारिता के पारंपरिक एकध्रुवीय मॉडल को चुनौती दी। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और व्हाट्सएप ने समाचार के उत्पादन और वितरण दोनों प्रक्रियाओं को विकेन्द्रित कर दिया। हिंदी पत्रकारिता संस्थानों ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से नए पाठक वर्ग तक पहुँच बनानी शुरू की। इसके साथ ही नागरिक पत्रकारिता को भी बल मिला, जहाँ आम नागरिक समाचार निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बने (कुमार, 2024)।मोबाइल प्रौद्योगिकी, विशेषकर 4G सेवाओं के प्रसार के बाद, समाचार उपभोग में क्रांतिकारी बदलाव आया। हिंदी समाचार पत्रों और चैनलों ने विशेष मोबाइल एप्लिकेशन विकसित किए, जिनसे समाचार सीधे पाठकों के हाथों में पहुँचे। यूट्यूब पर हिंदी न्यूज़ चैनलों ने विशेष कार्यक्रमों, लाइव कवरेज और त्वरित बुलेटिन के माध्यम से व्यापक दर्शक वर्ग को आकर्षित किया (पाठक, 2025)।

तकनीकी विकास ने हिंदी पत्रकारिता में स्वतंत्र डिजिटल मीडिया संस्थानों के उदय को भी संभव बनाया। 'द वायर हिंदी', 'गांव कनेक्शन', 'जनचौक', 'न्यूज़लॉन्ड्री हिंदी' जैसे प्लेटफॉर्म्स ने स्वतंत्र, खोजी और वैकल्पिक पत्रकारिता को बढ़ावा दिया। इन संस्थानों ने भीड़ से अलग विश्लेषणपरक और तथ्य-आधारित रिपोर्टिंग प्रस्तुत करने का प्रयास किया।हालाँकि तकनीकी क्रांति ने हिंदी पत्रकारिता को नई ऊंचाइयाँ प्रदान कीं, किन्तु इसके साथ कुछ जटिल समस्याएँ भी उभरीं। फेक न्यूज़ का तीव्र प्रसार, ट्रोलिंग, सनसनीखेज पत्रकारिता की प्रवृत्ति, और पाठकीय ध्यान आकर्षित करने की प्रतिस्पर्धा ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता को कई बार संकट में डाला (इरेटन, चेरिलिन, पोसेटी, जूली,2022)। डिजिटल विज्ञापन बाजार में बड़ी कंपनियों के एकाधिकार ने स्वतंत्र पत्रकारिता के आर्थिक आधार को भी चुनौती दी।फिर भी, 1990 से 2020 तक हिंदी पत्रकारिता ने तकनीकी नवाचारों के साथ निरंतर स्वयं को ढालने की कोशिश की। डिजिटल सब्सक्रिप्शन मॉडल, तथ्य-जांच पोर्टल्स और डेटा पत्रकारिता के नए प्रयोगों के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता ने अपने सरोकारों और व्यावसायिक जरूरतों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया (शर्मा,1997)।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हिंदी पत्रकारिता का भविष्य (2020–वर्तमान)

2020 के बाद हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ने एक निर्णायक भूमिका निभानी शुरू कर दी। कोविड-19 महामारी ने डिजिटल उपभोग को गति दी, जिससे हिंदी मीडिया हाउसों ने एआई-आधारित टूल्स का प्रयोग समाचार संग्रहण, संपादन और वितरण तेज़ी से शुरू किया (पाठक, 2025)।समाचार लेखन में एआई का प्रयोग स्वचालित रिपोर्टिंग के रूप में सामने आया। खेल, मौसम, शेयर बाजार जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में डेटा-आधारित समाचार लेख एआई टूल्स द्वारा स्वतः तैयार किए जाने लगे। 'भास्कर', 'अमर उजाला' और 'हिंदुस्तान' जैसे बड़े मीडिया संस्थानों

ने अपने डिजिटल संस्करणों में एआई आधारित कंटेंट जनरेशन की शुरुआत की (श्रीनिवासराव, 2024)।

पाठकों की रुचियों का विश्लेषण करने के लिए हिंदी समाचार पोर्टलों ने मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग बढ़ाया। पाठकों की ब्राउज़िंग आदतों के आधार पर वैयक्तिकृत समाचार फ़ीड्स तैयार किए जाने लगे (मुलाहुवैश, ग्योरिक, गफूर, मगदीद, रावत, 2020)। इससे 'एंगेजमेंट' और 'रीडिंग टाइम' में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। एआई-संचालित बॉट्स ने हिंदी समाचार वितरण में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। कई मीडिया संस्थानों ने व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर एआई-आधारित न्यूज़ बॉट्स विकसित किए जो पाठकों को व्यक्तिगत रूप से समाचार उपलब्ध कराते हैं। इन बॉट्स ने न केवल संवाद बढ़ाया, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में हिंदी पत्रकारिता की पहुँच को भी व्यापक बनाया। विजुअल कंटेंट निर्माण में भी एआई ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। हिंदी न्यूज प्लेटफॉर्म्स ने ऑटोमेटेड वीडियो जनरेशन टूल्स का प्रयोग कर शॉर्ट वीडियो, ग्राफिक्स और विजुअल स्टोरीज़ का उत्पादन बढ़ाया (प्रणवेन्द्र, 2024)। सोशल मीडिया के 'रील्स' और 'शॉर्ट्स' फार्मेट के अनुरूप हिंदी समाचार प्रस्तुतियों का नया स्वरूप उभरा, जिससे युवा दर्शकों को आकर्षित करने में सफलता मिली। फैक्ट-चेकिंग के क्षेत्र में एआई टूल्स का विकास हिंदी पत्रकारिता के लिए महत्वपूर्ण रहा। 'ऑल्ट न्यूज़ हिंदी', 'बूम हिंदी' जैसे संस्थानों ने मशीन लर्निंग आधारित फैक्ट-चेकिंग तकनीकों का प्रयोग किया, जिससे फेक न्यूज़ के प्रसार पर कुछ हद तक नियंत्रण संभव हुआ (किन, 2025)।

AI के कारण उत्पन्न नैतिक, भाषाई और व्यावसायिक प्रश्न

हाल के वर्षों में, एआई तकनीकों, विशेष रूप से डीप लर्निंग, की प्रगति ने पत्रकारिता की क्षमताओं को और बढ़ाया है। इसकी सहायता से परिष्कृत भावना विश्लेषण, रीयल-टाइम रिपोर्टिंग सहायता और जटिल लेखों का निर्माण संभव हो गया है। साथ ही, तथ्य-जांच के लिए एआई उपकरणों का उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है, जिससे गलत सूचनाओं और डीपफेक से निपटने में मदद मिल रही है। हालाँकि, जैसे-जैसे पत्रकारिता में एआई के अनुप्रयोग बढ़े हैं, वैसे-वैसे उनके निहितार्थों पर नैतिक और व्यावसायिक चर्चाएँ भी बढ़ी हैं। पारदर्शिता, पूर्वाग्रह और मानव पत्रकारों के संभावित विस्थापन की चिंताएँ, पत्रकारिता में एआई पर बहस के केंद्रीय विषय बन गए हैं (वांग, 2021) ।एआई के आगमन से हिंदी पत्रकारिता में नैतिक प्रश्न भी उभरे। एआई जनरेटेड सामग्री की विश्वसनीयता, फेक न्यूज़ का स्वतः प्रसार, और पत्रकारिता में मानवीय विवेक की भूमिका जैसे प्रश्नों पर गंभीर विमर्श शुरू हुआ। कुछ विद्वानों का तर्क है कि एआई हिंदी पत्रकारिता में यांत्रिकता और त्वरितता तो लाएगा, लेकिन उसमें मानवीय संवेदनशीलता और विश्लेषणात्मक गहराई का अभाव रहेगा (क्षत्रिय, 2024)। नैतिक मोर्चे पर, समाचारों के चयन और प्राथमिकता निर्धारण में एआई एल्गोरिदम का उपयोग पूर्वाग्रह

और पारदर्शिता को लेकर गंभीर चिंताएँ पैदा करता है। ये एल्गोरिदम, जो अक्सर अस्पष्टता में लिपटे रहते हैं, अनजाने में अपने प्रशिक्षण डेटा में मौजूद पूर्वाग्रहों को बनाए रख सकते हैं, जिससे एआई-संचालित पत्रकारिता की निष्पक्षता और जवाबदेही पर सवाल उठते हैं। थॉमस रॉयटर फाउंडेशन के शौध में ज्ञात हुआ की एआई के उच्च स्तर के उपयोग के बावजूद, आधे से ज़्यादा उत्तरदाताओं (53.4%) ने पत्रकारिता उद्योग में नैतिकता पर एआई के प्रभाव के बारे में उच्च स्तर की चिंता व्यक्त की। उल्लेखनीय रूप से, 20.2% ने "बेहद चिंतित" होने की सूचना दी, जबकि 33.2% एआई के नैतिक निहितार्थों को लेकर "बहुत चिंतित" थे। इसके साथ ही, व्यक्त की गई अतिरिक्त चिंताओं में रचनात्मकता और मौलिक रिपोर्टिंग का संभावित क्षरण (54.3%), आलोचनात्मक सोच कौशल में कमी (51.4%), और गलत सूचना के बढ़ने का जोखिम (49%) शामिल हैं (रैडक्लिफ, 2025)। AI के बढ़ते उपयोग से सरल रिपोर्टिंग, हेडलाइन जनरेशन, ट्रेंड विश्लेषण आदि कार्यों में मानव श्रम की अपेक्षा कम होती जा रही है। हिन्दी पत्रकारों, विशेषकर उन पत्रकारों की भूमिका दबाव में है जो स्थानीय समाचार, अनुवाद या क्षेत्रीय मीडिया में काम करते हैं (नन्दनी, इंदौरा, सिंह,2024)। हिन्दी भाषायी विविधताओं से समृद्ध है – अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मगही आदि। AI मॉडल अक्सर केवल मानक हिन्दी के लिए तैयार किये जाते हैं, जिससे क्षेत्रीय भाषा और बोलियों की विशेषताएँ और सांस्कृतिक सन्दर्भ ह्रासित या गलत रूप में प्रस्तुत हो सकते हैं। AI-जनित समाचारों में तथ्यात्मक अशुद्धियाँ और संदर्भों की कमी अक्सर पायी जाती हैं। उदाहरण स्वरूप एक अध्ययन में पाया गया कि AI-जनित लेख संरचनात्मक रूप से स्पष्ट रहते हैं लेकिन तथ्यात्मक सव सत्यापन, संदर्भ उद्धरण और पूर्ण सूचना की दृष्टि से पारंपरिक पत्रकारों द्वारा लिखित लेखों से पीछे रहते हैं (झाक्सीलीकबायेवा, आर., बुर्किटबायेवा, ए., झाखिप, बी., काबिलगज़िना, के., और अशिरबेकोवा, जी., 2025)।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हिंदी पत्रकारिता में श्रम संरचना को भी प्रभावित किया। कंटेंट निर्माण, संपादन और वितरण की प्रक्रियाओं में स्वचालन के बढ़ते प्रयोग से पत्रकारों और संपादकों की भूमिका में बदलाव आया। विश्लेषणात्मक और खोजी पत्रकारिता के विशेषज्ञों की माँग बढ़ी, जबकि सामान्य रिपोर्टिंग कार्यों में स्वचालन के चलते मानवीय हस्तक्षेप घटा। युवा हिन्दी पाठकों में समाचार की खपत के तरीके बदल रहे हैं समरीजेशन, ट्रांसलेशन, विडियों-आडियों फार्मेट बढ रहा है। एआई इस बदलाव को सहज कर सकता है, लेकिन इससे गहराई और विश्लेषणात्मक पत्रकारिता की अपेक्षाएँ प्रभावित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए रॉयटर्स इंस्टीट्यूट डिजिटल न्यूज़ में पाया गया कि भारत में लगभग **27% लोग समाचार के संक्षिप्त लेख पसंद करते हैं,** और **24% अनुवादित समाचारों को प्राथमिकता देते हैं** (नादिग, 2025)।

हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य में AI की संभावनाएँ

भविष्य की ओर देखें तो हिंदी पत्रकारिता में एआई का प्रभाव और गहरा होने की संभावना है। प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) तकनीकों में सुधार से हिंदी में और अधिक परिष्कृत और सटीक स्वचालित रिपोर्टिंग संभव होगी। साथ ही, वॉयस-आधारित समाचार सेवाओं, जैसे स्मार्ट स्पीकर और वॉयस असिस्टेंट्स के माध्यम से हिंदी समाचार प्रसारण एक नई दिशा ले सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हिंदी पत्रकारिता में 'हाइब्रिड मॉडल' को जन्म देगा, जिसमें एआई और मानव पत्रकारिता का संयोजन होगा। यांत्रिक रिपोर्टिंग कार्यों को एआई संभालेगा, जबकि जटिल सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषयों पर मानव पत्रकार विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे (कुमार,2024)।

यह संदर्भ पत्रकारिता में एआई की गतिशील प्रकृति को रेखांकित करता है, यह दर्शाता है कि कैसे एआई एक सहायक उपकरण से आधुनिक पत्रकारिता के एक केंद्रीय घटक में परिवर्तित हो गया है और तकनीकी नवाचार और पत्रकारिता में नैतिकता के बीच चल रहे संवाद को उजागर करता है (लुट्ज़ 2019)। हिन्दी पत्रकारिता में साधारण समाचार जैसे मौसम की भविष्यवाणी, वित्तीय बाजार सारांश, खेल के स्कोर आदि AI-टेम्प्लेट आधारित लेखन से त्वरित रूप से तैयार किये जा सकते हैं। इससे समाचार संस्थानों को समय एवं संसाधन बचाने का अवसर मिलेगा, ताकि पत्रकार अधिक विश्लेषणात्म-क, साक्षात्कार-आधारित और गहरा शोध पूरा करने में समय लगा सकें। इसके साथ ही हिंदी पत्रकारिता को एआई के उपयोग में पारदर्शिता, नैतिकता और स्वतंत्रता के उच्च मानकों को स्थापित करने की आवश्यकता होगी। सामग्री निर्माण में एआई की भूमिका को स्पष्ट रूप से चिन्हित करना, डेटा प्राइवेसी की रक्षा करना और एआई के संभावित पक्षपातों का निराकरण करना आवश्यक होगा। डेटा माइनिंग और व्याख्या में एआई की क्षमता और भी गहरी होने की संभावना है, जिससे बड़े डेटा सेट से जटिल कहानियों को निकालना संभव होगा। इससे पत्रकार उन रुझानों और आख्यानों को उजागर कर सकेंगे जो वर्तमान में विशाल डेटा के भीतर छिपे हुए हैं (मुनोज़ एट अल., 2023)। यद्यपि तकनीकी प्रगति हिंदी पत्रकारिता को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है, किंतु पत्रकारिता के मूल सरोकार सत्य, निष्पक्षता और सामाजिक उत्तरदायित्व को अक्षुण्ण बनाए रखना भविष्य की सबसे बड़ी चुनौती होगी। एआई को हिंदी पत्रकारिता के उपकरण के रूप में अपनाना होगा, किंतु उसे पत्रकारिता के आदर्शों का स्थान नहीं लेने देना चाहिए।

पत्रकार सूचना एकत्र करने, तथ्यों की जाँच करने और डेटा का विश्लेषण करने के लिए एआई का अधिक उपयोग करेंगे। हालाँकि, कहानी कहने की प्रक्रिया में मानवीय रचनात्मकता अभी भी बरकरार रहेगी। सूचनात्मक लेख लिखने में, एआई का उपयोग किया जाएगा। यह अधिक सटीक लेख लिखेगा,

जिसमें बेहतर वाक्य संरचना होगी जो मानव लेखन से काफी मिलती-जुलती होगी। चूँकि एआई का उपयोग कामकाज में एक आम बात बनती जा रही है, इसलिए सरकारें और मीडिया संस्थान एआई के नैतिक उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए बेहतर और सख्त दिशानिर्देश विकसित करेंगे। एआई सहायक पत्रकारों को शोध कार्य, सामग्री विकास और दर्शकों को आकर्षित करने में मदद करेंगे (आफ्टा, 2025)। गलत सूचनाओं का समाधान करके और पाठकों के बीच विश्वास बहाल करके पत्रकारिता में सकारात्मक योगदान देने के लिए अनुकूलित एलएलएम के पास एक आशाजनक अवसर मौजूद है। एआई और पत्रकारिता का संयोजन सत्यता, सटीकता और पारदर्शिता के मानकों को ऊँचा उठाने की क्षमता रखता है, जिससे हमारे सामाजिक परिदृश्य में पत्रकारिता की भूमिका और मज़बूत होगी (चेंग, 2025)।

निष्कर्ष

उदंत मार्तण्ड' से शुरू हुई हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्षों की यात्रा एक लंबी और प्रेरणादायक रही है। इसने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, स्वतंत्रता के बाद तेजी से विस्तार किया और तकनीकी क्रांति के साथ खुद को ढाला। आज, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आगमन के साथ, हिंदी पत्रकारिता एक नए युग में प्रवेश कर रही है। एआई आधारित उपकरण और तकनीकें समाचार संपादन, विश्लेषण, और वितरण के क्षेत्र में अपनी जगह बना रही हैं। हिन्दी पत्रकारिता भी धीरे-धीरे इस बदलाव को अपना रही है। समाचार एजेंसियों और मीडिया संस्थानों ने कुछ हद तक एआई का उपयोग करना शुरू कर दिया है, मुख्य रूप से डेटा विश्लेषण, स्वचालित समाचार निर्माण के कुछ पहलुओं, और सोशल मीडिया पर समाचारों के वितरण को अनुकूलित करने के लिए। अगर हम 2030 तक या उससे पहले "कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता" या ए.जी.आई. के पड़ाव को पार कर लेते हैं, तो हम ए.आई. "बायलाइन्स" को संतुलन, व्यापकता और एक उपयोगी गैरमानवीय दृष्टिकोण से जोड़ पाएँगे। इसका मतलब मानव पत्रकारों का अंत नहीं होगा, बल्कि कृत्रिम पत्रकारों का आगमन होगा।
एआई इसमें दक्षता, सटीकता और निजीकरण की नई संभावनाएं लेकर आया है, लेकिन इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। भविष्य में हिंदी पत्रकारिता की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह इन अवसरों का लाभ कैसे उठाती है और चुनौतियों का समाधान कैसे करती है, ताकि सूचना और ज्ञान के प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को बनाए रखा जा सके। प्रारंभ में संस्कृतनिष्ठ और गूढ़ भाषा के प्रयोग से शुरू हुई हिंदी पत्रकारिता अब अधिक सरल, संवादात्मक और तकनीकी प्रभाव से बदली हुई दिखाई देती है। हिंदी पत्रकारिता ने समय के साथ जन-चेतना, भाषा विकास और सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज जरूरत है कि इस विरासत को सहेजते हुए नए दौर की चुनौतियों का विवेकपूर्ण तरीके से सामना किया जाए।

संदर्भ

- आकाश,तकयार.(2025).मीडिया और मनोरं जन में एआई: उपयोग के मामले, लाभ और समाधान.लीवेहर्ट्ज https://www.leewayhertz.com/ai-in-media-and-entertainment.

- पाठक,सुरेन्द्र.(2025).डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता की सार्वभौमता: संभावनाएं और चुनौतियां,एल जे विश्वविद्यालय.
- किन,जिआओयांग.(2025).कॉम्बेटिंग मिसइ न्फॉर्मेशन इन द: पावर्ड फैक्ट चेकिंग-एआई,डिजिटल एज फ्रन्टीयर्स इन ह्युमेनिटिज़ एण्ड सोशल साइन्स ,(4)5,पीपी.255-252. स्मृति,नादिग.(2025). https://analyticsindiamag.com/ai-news-updates/india-witnesses-shift-towards-ai-generated-news-consumption-reuters-institute/?utm_source=chatgpt.com
- पास्कालिया,मारिय(2025).एक्सप्लोरिंग ए आई एम द टाइप: ए क्रिटिकल रिफ्लेक्शन अराउंड द एप्लिकेशन एंड इम्पलिकेशन ऑफ एआई इन जर्नलिजम, सोसाइटी ,5(2),23.https://doi.org/10.3390/soc15020023
- जोशुआ,रोथमैन .(2025) .https://www.newyorker.com/culture/open-questions/will-ai-save-the-news
- डेमियन,रैडक्लिफ.(2025). जर्नलिज्म इन द एआई एरा: अपॉर्चुनिटी एंड चैलेंज इन द ग्लोबल साउथ एंड एमर्जिंग इकॉनोमी. लंडन: थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन. https://www.trust.org/wp-content: https://www.trust.org/wp-content/uploads/2025/01/TRF-Insights-Journalism-in-the-AI-Era.pdf
- आर., बुर्किटबायेवा, ए., झाखिप, बी., काबिलगज़िना,के., और अशिरबेको वा,जी.झाक्सीलीकबायेवा.(2025). आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड जर्नलिस्ट एथिक्स: ए कम्पेरेटिव एनालिसिस ऑफ एआई-जनरेटिड कन्टेंट एंड ट्रेडिशनल जर्नलिजम. जर्नलिज्म एंड मीडिया, 6(3), 105. doi:https://doi.org/10.3390/journalmedia6030105
- प्रभात,इंदौरा,सिंह,नन्दनी.(2024).आर्टिफिशि यल इंटेलिजेंस इन जर्नलिज्म: एंड ओवरव्यू ऑफ इट्स एप्लीकेशन्स एंड यूज्स. जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन एंड मैनेजमेंट, 3(3),237-242. doi:https://doi.org/10.58966/JCM2024337
- प्रणवेन्द्र,संगीता.(2024). मीडिया में बदलाव लाने में एआई की भूमिका.योजना,68(2),पीपी35-49.कुमार,संदीप.(2024). समाज और राजनीति में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका .पलवल: चिरेन प्रकाशन. क्षत्रिय,नीर.(2024).
- डिसइन्फॉर्मेशन एण्ड मिसइन्फॉर्मेशन इन द एज ऑफ आर्टिफिशियल इनटेलिजेन्स एण्ड मेटावर्स,इन कम्प्युटर,12(57).110-116.
- पांडे,मृडाल.(2024). हिन्दी पत्रकारिता एक यात्रा.दिल्ली:राधाकृष्ण प्रकाशन.
- श्रीनिवासराव,के.(2024).आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मीडिया का भविष्य,योजना ,68(02),30-34.
- ईसी, पेड्राज़ा, जीसी, क्यूबिलोस-सांचेज़, आर., अपोंटे-मोरेनो, ए., और बुइट्रैगो, एमई मुनोज़. (2023). पीयूई अटेक डिटेक्शन बाय यूजिंग डीएनए एंड एट्रोफी इन कोऑपरेटिव मोबाइल कग्निटिव रेडियो नेटवर्क्स. फ्यूचर इंटरनेट, *15(6)*,202. https://doi.org/10.3390/fi15060202

- इरेटन, चेरिलिन, पोसेटी, जूली. *(2022)*. पत्रकारिता, 'फर्जी खबर' और दुष्प्रचार, यूनेस्को प्रकाशन.
- रश्मी(2022).लोकतंत्र पर ग्रहण,प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली
- कुमार,राहुल.(2022).काले दिन के काले कागज़.लखनऊ:बीएफसी पब्लिकेशन.
- फ़ज़ल.(2022).हिंदी पत्रकारिता की भाषा बदल डाली थी प्रभाष जोशी ने,बीबीसी न्यूज़ हिन्दी. https://www.bbc.com/hindi/india-63515812
- भारद्वाज,वेदप्रकाश.(2022).स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय पत्रकारिता,केशव संवाद,अंक 5,पीपी.6-7.
- शम्भूनाथ.(2022).हिन्दी नवजागरण भारते न्दु और उनके बाद.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.
- सिंह,अराफात(2022).1857 के प्रथम स्वतंत्रा संग्राम की पत्रकारिता.नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- अग्रवाल,अंजु.(2021).हिन्दी पत्रकारिता: डिजिटल युग में चुनौतियां और अवसर,इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड एडुकेशन रिसर्च,10(4),1 12-118.
- मिश्रा,बिहारी,कृष्ण.(2021).हिन्दी पत्रकारिता आश्वस्ति और आशंका.नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- वांग,सीएल.(2021). न्यू फ्रंटियर एंड फ्यूचर डायरेक्शन इन इंटरैक्टिव मार्केटिंग: उद्घाटन संपादकीय,इंटरैक्टिव मार्केटिंग शौध पत्रिका,15(1),9-1. *DOI: https://doi.org/10.1108/JRIM-03-2021-270.*
- मुलाहुवैश, ग्योरिक, गफूर, मगदीद,रावत. (2020).इफिशिएंट क्लासिफिकेशन मोडल ऑफ वेब न्यूज डोक्युमेंट यूजिंग मशीन लर्निंग एल्गोरिदम्स फॉर एक्युरेट इन्फोर्मेशन,कंप्यूटर एंड स्कोरिटी, खंड 98. DOI:https://doi.org/10.1016/j.cose.2020.102006.
- सी.लुट्ज़.(2019). आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और बिग डेटा के युग में डिजिटल असमानताएँ. मानव व्यवहार और उभरती प्रौद्योगिकियाँ, 1, 141-148.
- सिंह,योगेन्द्र.(2017).आपातकाल में मीडिया की भूमिका का अध्ययन,श्रिंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,4(5),54-56.
- चतुर्वेदी,जगदीश.*(2009)*.हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- एएएफटी.(2005).*www.aaft.com. aaft.com/blog/mass-communication: https://aaft.com/blog/mass-communication/ai-in-journalism-transforming-the-future-of-news-reporting/*
- वोहरा,असरानी.(2004).स्वाधीनता सेनानी लेखक-पत्रकार. नई दिल्ली: प्रतिभा प्रतिष्ठान.
- मिश्रा,बिहारी,कृष्ण.(2004).हिन्द्री पत्रकारिता. नई दिल्ली:भारतीय जनपीठ.

- जैन,अरुण.(2003).पत्रकारिताऔर पत्रकारिता. नई दिल्ली : हिन्दी बुक सेंटर.
- तिवारी,अर्जुन.(1997).हिन्दी पत्रकारिता का वृहत इतिहास. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
- शर्मा,अशोक.(1997).संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- तिवारी,अर्जुन.(1997).हिन्दी पत्रकारिता का वृहत इतिहास.नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन .

CITATION:

Chandrashekhar, D. (2025). उदंत मार्तण्ड से ऐ आई तक हिंदी पत्रारिता का क्रमिक विकास का विश्लेषण. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 117–132.